गाय/भैंसो मे कृत्रिम गर्भाधान एवं प्राकृतिक गर्भाधान द्वारा पशुप्रजनन की सुविधाओ का सुधार एवं विस्तार तथा बैफ के माध्यम से प्रजनन सुविधाए उपलब्ध कराने की योजना।

दिशा–निर्देश

उपनिदेशक के दायित्व

1– उपरोक्त योजना का कियान्वयन मण्डलीय समस्त जनपदो मे प्रदत्त लक्ष्य के सापेक्ष कराना होगा।

2– योजना का अनुश्रवण निदेशालय द्वारा पूर्व मे दिये गये दिशा निर्देशो के अनुरूप सुनिश्चित करेगे।

3– योजनान्तर्गत मानक मद अनुरूप स्वीकृत धनराशि के सापेक्ष नियमानुसार व्यय की समीक्षा करेंगे।

4– कृत्रिम गर्भाधान कार्य का आकस्मिक निरीक्षण कर पाई जाने वाली कमियो के संबंध मे मडलान्तर्गत समस्त पशुचिकित्साधिकारी/पशुधन प्रसार अधिकारी, को उपयुक्त दिशा–निर्देश जारी करते हुए एक प्रति निदेशालय पशुपालन विभाग को उपलब्ध कराये।

5– मण्डलान्तर्गत मण्डल हेतु आवंटित लक्ष्य की पूर्ति की पूर्ण जिम्मेदारी संबंधित उपनिदेशक की होगी।

मुख्य पशुचिकित्साधिकारी के दायित्व

योजनान्तर्गत आवश्यक इनपुट की आपूर्ति निर्वाध रूप से सुनिश्चित किया जाना है।

1– आपूर्ति मे किसी प्रकार की कठिनाई से समय रहते तत्काल अधोहस्ताक्षरी को अवगत कराए ताकि नियमानुसार निर्णय लेतु हुए कार्यवाही सुनिश्चित की जा सके।

2– स्वीकृत धनराशि को मानक मद अनुरूप विभिन्न नियमो एवं उपनियमो के सापेक्ष ही व्यय किया जाय।

जनपद के अन्तर्गत कृ0ग0 के सफलतापूर्वक कियान्वयन हेतु पशुचिकित्साधिकारियो एवं पशुधन प्रसार अधिकारियों को निर्देश जारी करे कि समस्त मासिक बैठको मे कृ0ग0 कार्य से जुडी योजना की समीक्षा को प्राथमिकता दी जाय।

प्रदत्य लक्ष्य की पूर्ति माहवार, त्रैमासवार एवं वर्षवार सुनिश्चित कराने हेतु हर सम्भव यास किये जाये।

समस्त पशुचिकित्साधिकारियो को कृत्रिम गर्भाधान के संबंध मे दिशा निर्देश–

एफ–। की मादा पशु का कृ0ग0 50 प्रतिशत विदेशी रक्त वाले सांडो के वीर्य से किया जाय हरियाणा का हरियाणा से भदावरी का भदावरी वीर्य से कृ0ग0 किया जाय ताकि इन प्रजातियो का संरक्षण हो सके। कृ0ग0 पंजिका मे सांड का नम्बर भी लिखा जाय तथा एक पंजिका अलग से बनाई जाय जिसमे पूर्ण विवरण रहे कि किस सांड की मां द्वारा कितना दूध दिया गया है तथा यह जानकारी जनपद के समस्त कर्मचारी तथा पैरावेट्स को भी रहे जिससे यदि कोई पशुस्वामी जानना चाहे कि उसके पशु को किस सांड के वीर्य से गर्भित किया जा रहा है उसकी मां द्वारा कितना दूध दिया गया है।

क्या करे–

1– स्ट्रा निकालने से पहले यह सुनिश्चित कर ले कि पशु गर्मी मे है अथवा नही।

2– सर्वप्रथम लाग फोर सेफ को तरल नत्रजन की वाष्प मे 15 सेकेण्ड तक ठंडा करे।

3– वीर्य स्ट्रा निकालते समय कण्टेनर को कायोकेन की गर्दन के नीचे ही रखकर लाग फोर सेफ से स्ट्रा निकाले।

4– स्ट्रा निकालने के आद स्ट्रा को 2–3 बार हवा मे हिलाये ताकि तरल नत्रजन हवा मे उड जाये तथा साफ रूई अथवा कपडे से पोछे।

5– 38 डिग्री सेल्सियस से 40 डिग्री सेल्सियस तक के गर्म पानी मे डालकर आधा से एक मिनट तक थाईग करे जिसके लिए किडनी ट्रे का उपयोग करे जिससे समान रूप से थईग हो सके।

6– स्ट्रा को पानी मे निकालकर जिधर से काटना है वह सिरा ऊपर रखते हुए स्ट्रा को हल्का झटका दे जिससे वायु के बुलबुले ऊपर आ जाए।

7– स्ट्रा काटते समय ये ध्यान रहे कि वायु के बुलबुले पूरा भाग काट दिया गया है।

8– स्ट्रा निकालने से पहले यह सुनिश्चित करे कि पशु गर्मी मे है अथवा नही यह भी ध्यान रहे कि पशु स्राव ठीक है किसी संक्रमण की संभावना तो नही है वीर्य को मिड आस मे ही डाले।

कृत्रिम गर्भाधान करते समय क्या नही करना चाहिए–

1– वीर्य निकालते समय स्ट्रा कन्टेनर को बाहर तक न ले जाये।

– स्ट्रा की थाईग चित्त अवस्था मे ही करे खडी अवस्था मे नही।

3– स्ट्रा को बाहर निकालकर हथेलियो के बीच मे रगडकर यह समझ ले कि थाईग हो गई है ऐसा करने से शुक्राणु मर जाते है तथा थाईग भी नही होती।

4– मुख्य पशुचिकित्साधिकारी यह सुनिश्चित कर ले कि सभी जगह थाईग की समुचित व्यस्था है बिना थाईग के कृ0ग0 तो नही किया जा रहा है।

5– वीर्य स्ट्रा मे वायु का बुलबुला न रहने दे यदि हवा का बुलबुला रह जायेगा तो हवा के दबाव से वीर्य पीछे की तरफ चला जायेगा तथा पूरा वीर्य नही पहुँच पायेगा।

6– स्ट्रा करते समय ध्यान रखे कि स्ट्रा टेढी न करे।

7– यदि पशु का स्राव ठीक नही है तो कृ0ग0 न करे तथा जांचोपरान्त समुचित उपचार करे।

8– वीर्य डालते समय इधर–उधर स्पर्श करने से बचे।